FUTURE OF GEOGRAPHY

भूगोल का भविष्य इसके ऐतिहासिक पृष्ठभूमि के आधार पर ही भविष्य के लिए किया गया एक प्रक्षेप है। भूगोल के भविष्य को निर्धारित करने हेतु इसके ऐतिहासिक पृष्ठभूमि की एक झलक प्रस्तुत करना आवश्यक होगा ताकि ऐतिहासिक पृष्ठभूमि के आधार पर भूगोल का भविष्य निर्धारित किया जा सके।

भूगोल के भविष्य-निर्धारण हेतु इसे निम्न अवधि में बांटा जा सकता है —

भूगोल का अतीत
1. प्राचीन भूगोल का स्वरूप।
2. अन्धकार युग का भूगोल।
3. पुर्नजागरण काल का भूगोल।
4. 18वीं सदी का भूगोल।
5. 19वीं सदी का भूगोल।

भूगोल का वर्तमान
6. 20वीं सदी का भूगोल।
7. 21वीं सदी का भूगोल व भूगोल का भविष्य।

भूगोल का भविष्य
8. भविष्य में भौगोलिक अध्ययन के आधार।
9. " भूगोल का आयाम
10. " " " लक्ष्य

प्राचीन चीर चिरसम्मत काल में भूगोल को भूतल का वर्णन कहा गया अर्थात् पृथ्वी तल का वर्णन ही भूगोल है। भूगोल का जनक - हिकैटियस, अरस्तु, हेरोडेटस इरेटोस्थनीज आदि विद्वानों ने बदलते स्वरूपों को उजागर किया है। पुर्नजागरण काल के बाद आधुनिक जनक के रूप में हम्बोल्ट एवं रिटर को स्वीकारा गया।

द्वितीय विश्व युद्ध के पश्चात् भूगोल में सांख्यकी विधियों का प्रवेश किया और 1960 के दशक में आचरण भूगोल तंत्र विश्लेषण एवं इन शाखाओं में शोध प्रारंभ हुआ।

1950-60 के दौरान यूरोप एवं अमेरिका में तथा 1960-80 के दशकों में भारतीय भूगोल में हवाई फोटो तकनीक Computer, सुदूर संवेदन एवं भौगोलिक सूचना प्रणाली, GIS जैसे सशक्त एवं प्रभावी तकनीकि के प्रयोग ने इस विषय की अध्ययन तकनीक एवं विधि तंत्र को नवीन मोड़ प्रदान किया।

वर्तमान समय में भूगोल के पास जो भी नूतनतम उपकरण है उसके प्रयोग से मानव के कई पीढ़ियों का कार्य श्रम वर्क करके कुछ वर्षों में पूरा कर लिया है। इससे न केवल भूगोल के नवीन शाखाओं का विकास हुआ है बल्कि परंपरागत शाखाओं में भी क्रांति आ गई है।

अब तो भारत के अधिकांश महाविद्यालयों एवं स्नातकोत्तर कक्षाओं में सुदूर संवेदन एवं कम्प्यूटर आधारित भौगोलिक सूचना प्रणाल के माध्यम से प्राप्त विभिन्न प्रकार के मानचित्रों के आधार पर अध्ययन अध्यापन प्रारंभ हो गया है। ऐसे ही मानचित्रों के आधार पर सभी देशों में Regional Planning की प्रक्रिया तेजी से प्रारंभ हो गई। भूगोल में प्रयुक्त तकनीकों ने मानव को अनेक प्रकार से सफलता की दहलीज पर लाकर खड़ा कर दिया है। वर्तमान 2000-10 के दशक में जिन विधियों के आधार पर भूगोल को अध्ययन किया (जा रहा है) 2050-60 के दशक में ये तकनीके इतिहास की बात बन जायेगी। 250-60 व 21वी सदी के अंत तक भूगोल के प्रकृति, दर्शन, अध्ययन, अध्यापन की विधि पूर्णतः बदल जायेगी। भूगोल के अध्ययन हेतु मात्र पुस्तके ही नहीं, वरन् उपकरण, हवाई फोटोग्राफ, सेटेलाईट इमेज, विद्युत कम्प्यूटर एवं अन्य सुनियोजित ऐसी विधियाँ विकसित होगी जिससे कि पृथ्वी का कोई भी भूतल अथवा सागर नितल भाग भूगोलवेत्ताओं के अवलोकन से ओझल नहीं हो पायेगा।

इस प्रकार भूगोल के बाह्य रूप-रेखा को छोड़कर उसका सारा विधि-तंत्र नवीन आधार पर विकसित होकर स्थापित होगा।

भविष्य में भूगोल की परिभाषा तथा में कोटि-कोटि अविकसित एवं पंगु मानवता को सभी प्रकार के पिछड़ेपन एवं शोषण से उबारने संबंधी विषय-वस्तु शामिल हो जायेगी।

विकासशील देशों में सामाजिक भूगोल महत्वपूर्ण हो जायगा। गरीब व दरिद्र, भूखी, बेरोजगारी, एवं अशिक्षित मानवता को उबारने का उपाय एवं गरीब-अमीर देशों का अंतर कम करने की विधियाँ भूगोल में महत्वपूर्ण हो जायेगी। पश्चिमी देशों में हुए अभिनव विकास से ऐसा प्रतीत होता है मानव मस्तिष्क, आज तक के विकसित नवीनतम जटिल कम्प्यूटर से भी अधिक जटिल माना जा रहा है। इसमें कोई आश्चर्य नहीं कि अमेरिका में यूरोपीय एवं एशियाई देशों से 2150 ई. तक सभी प्रकार के विज्ञानों का विकास भिन्न-भिन्न प्रकार से होने लगेगा। और आने-वाले 3-4 दशकों में क्षेत्रों में घटित घटनाओं, उनकी व्यवस्था, स्वरूप, तकनीक व विधि भी बदल जायगी।

LANDSAT उपग्रह श्रृंखला, रोहिणी, IBINSAT से विभिन्न Wavelength वाली अलग-अलग Band से प्राप्त Imageries से संसाधनों के बारे में बहुत उपयोगी जानकारी मिल रही है इसके साथ अन्तरिक्ष में अन्य उपग्रह भी विभिन्न उद्देश्यों से कार्यरत है। इनकी सहायता से भविष्य में Geomorphology, Climatology, Oceanography, Environmental Geog., Agricultural & Industry geog. के स्वरूपों में भी परिवर्तन हो जायेगा।

वनों के प्रकार, उसके विकास की अवस्था, फसल-रोगों के प्रकार, वन कटाव एवं वनारोपण, मिट्टियों के प्रकार, दवाग्नि, आदि का सूक्ष्मता पूर्वक अध्ययन किया जा सकेगा। Computer द्वारा प्राप्त मानचित्रों के द्वारा तुलनात्मक अध्ययन के नए-नए आयाम स्थापित होगा, जो मानव कल्याण हेतु बहुमुखी उपयोग वाला होगा।

LASER RAYS का प्रयोग कर साधारण फोटो को त्रिविमीय (Three dimensional) बनाने के लिए HOLOGRAPHY का प्रयोग किया जा रहा है उक्त तकनीक वायुफोटो. इमेजरी, सुदूर-संवेदन तंत्र को सरलने हेतु विशिष्ट प्रशिक्षण कार्यक्रम, प्रयोगशाला एवं अनुसंधान केन्द्र स्थापित किए गए है। भारत में देहरादून, हैदराबाद, अहमदाबाद, खड़गपुर, हासन, कलकत्ता, दिल्ली, श्रीहरिकोटा में ऐसे केन्द्र विकसित किए गये। ऐसी वैज्ञानिक सुविधाओं के फलस्वरूप Locality Area. Various types of regions - Macro, Meso, & Micro की तथ्यात्मक व सही-सही सीमा हो सकेगी जिसके फलस्वरूप भूगोल अपने भविष्य में काफी आगे बढ़ जाये।

भविष्य के नवीन परिवेश में जिस तेजी से भौगोलिक आँकड़े, फोटो, इमेजरी एवं भूतल की सम्पूर्ण सूचनाएँ संग्रह होगा, उसके परिष्करण, विश्लेषण एवं परिणाम भी वर्तमान की तुलना में अधिक तेजी से प्राप्त होगा।

Super fast Computer की मदद से उच्चस्तरीय सांख्यकीय विधियों की समस्याओं का समाधान एवं कम्प्यूटर मस्तिष्क से नियंत्रित मशीनी मानव (रोबोट) भविष्य में और भी कुशल और विस्तृत होजायेगा। USA में नवीनतम सुविधाओं एवं तकनीकों की सहायता से सामाजिक भूगोल भी विभिन्न शाखाओं में शोध किया जा रहा है।

आज का भूगोल विज्ञान एक ऐसे ज्ञान तंतुओं के जाल में उलझा है जिसमें से शनैः शनैः अनेक परंपरागत तथ्य छोड़ने है एवं उसके बजाए नवीन तथ्य ग्रहण करने है। इस दृष्टि से 20वीं सदी के अंतिम दो दशक एवं 21वीं सदी का प्रथम दशक (2001-2011) बहुत-बहुत महत्वपूर्ण सिद्ध हुआ है। इसी प्रकार के नवीन तकनीक के बावजूद आज भूगोल के लिए यह तथ्य काफी महत्वपूर्ण माना गया।